सत्य मार्ग की खोज, सीरीज़ - 28

हज़रत ईसा (अलै०)
की शिक्षाओं के अनुसार

"परमेश्वर" कौन है?

एक अल्लाह की वास्तविकता के आधार पर ही
पूरी इंसानियत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है!

जमाअत इस्लामी हिन्द
दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, नई दिल्ली-110025
9650022638
www.islamsabkeliye.com
www.facebook.com/islamsabkeliyeofficial

ईश्वर, अति दयावान, अत्यंत कृपाशील के नाम से

"परमेश्वर" कौन है?

"ईश्वर" कौन है? हज़रत ईसा (अलै०) की क्या शिक्षाएं थीं?

"निश्चय ही उन्होंने (सत्य का) इनकार किया, जिन्होंने कहा, "अल्लाह मरयम का बेटा मसीह ही है।" जब मसीह ने कहा था, "ऐ इसराईल की सन्तान! अल्लाह की बन्दगी करो, जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है। जो कोई अल्लाह का साझी ठहराएगा, उसपर तो अल्लाह ने जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना आग है। अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं।" **(कुरआन 5:72)**

"निश्चय ही उन्होंने इनकार किया, जिन्होंने कहा, "अल्लाह तीन में का एक है।" हालाँकि अकेले पूज्य के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। जो कुछ वे कहते हैं यदि इससे बाज़ न आएँ तो उनमें से जिन्होंने इनकार किया है, उन्हें दुखद यातना पहुँचकर रहेगी।"

(कुरआन 5:73)

फिर क्या वे लोग अल्लाह की ओर नहीं पलटेंगे और उससे क्षमा याचना नहीं करेंगे, जबकि अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है। **(कुरआन 5:74)**

1) हज़रत ईसा(अलै०) स्वयं लोगों को एक "अल्लाह" (परमेश्वर/प्रभु/यहोवा) की ओर बुलाते थे।

'यीशु ने उत्तर दिया, "सबसे महत्त्वपूर्ण आदेश यह है: 'हे इस्राएल, सुन! केवल हमारा परमेश्वर ही एकमात्र प्रभु है।"

(Mark 12:29)

"यीशु ने उसे उत्तर देते हुए कहा, "शास्त्र में लिखा है: 'तुझे बस अपने प्रभु परमेश्वर की ही उपासना करनी चाहिये। तुझे केवल उसी की सेवा करनी चाहिए!" **(Luke 4:8)**

"कोई भी एक साथ दो स्वामियों का सेवक नहीं हो सकता क्योंकि वह एक से घृणा करेगा और दूसरे से प्रेम। या एक के प्रति समर्पित रहेगा और दूसरे का तिरस्कार करेगा।"

(Mathew 6:24)

"यीशु ने उस से कहा, मुझे मत छू क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया, परन्तु मेरे भाइयों के पास जाकर उन से कह दे, कि मैं अपने पिता, और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूं।' **(John 20:17)**

हज़रत ईसा (अलै०) ने सिर्फ़ इतना ही नहीं कहा कि, "अल्लाह एक है", उन्होंने उसी की उपासना की और अपनी

अलैहि* : अलैहिस्सलाम, अर्थात उनपर ईश्वर की सलामती हो।

शिक्षाओं पर स्वयं भी अमल किया।

2) हजरत ईसा(अलै०) ने सिर्फ़ अल्लाह की उपासना की।

"ऐसा हुआ कि जब सब लोग बपतिस्मा ले रहे थे तो यीशु ने भी बपतिस्मा लिया। और जब यीशु प्रार्थना कर रहा था, तभी आकाश खुल गया।" **(Luke 3:21)**

"उन्हीं दिनों ऐसा हुआ कि यीशु प्रार्थना करने के लिये एक पहाड़ पर गया और सारी रात परमेश्वर की प्रार्थना करते हुए बिता दी।" **(Luke 6:12)**

3) चमत्कार करते समय हज़रत ईसा(अलै०) अल्लाह से प्रार्थना करते थे।

"यीशु फूट-फूट कर रोने लगा।.....और यीशु ने अपनी आँखें ऊपर उठाते हुए कहा, "परम पिता मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ क्योंकि तूने मेरी सुन ली है। **(John 11:35-41)**

4) हज़रत ईसा(अलै०) चमत्कारों पर अल्लाह की प्रशंसा करते थे।

"इससे भीड़ के लोगों को, यह देखकर कि बहरे गूंगे बोल रहे हैं, अपाहिज अच्छे हो गये, लँगड़े-लूले चल फिर रहे हैं और अन्धे अब देख पा रहे हैं, बड़ा अचरज हुआ। वे इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति करने लगे।" **(Mathew 15:31)**

"सो वह खड़ा हुआ, तुरंत अपना बिस्तर उठाया और उन सब के देखते ही देखते बाहर चला गया। यह देखकर वे अचरज में पड़ गये। उन्होंने परमेश्वर की प्रशंसा की और बोले, "हमने ऐसा कभी नहीं देखा!" **(Mark 2:12)**

"और तुरन्त ही उसे आँखें मिल गयीं। वह परमेश्वर की महिमा का बखान करते हुए यीशु के पीछे हो लिया। जब सब लोगों ने यह देखा तो वे परमेश्वर की स्तुति करने लगे।" **(Luke 18:43)**

5) कठिन समय में हज़रत ईसा (अलै०) अल्लाह से प्रार्थना करते थे।

"फिर थोड़ा और आगे बढ़ने के बाद वह धरती पर झुक कर प्रार्थना करने लगा कि यदि हो सके तो यह घड़ी मुझ पर से टल जाये।" **(Mark 14:35)**

"उधर यीशु बड़ी बेचैनी के साथ और अधिक तीव्रता से प्रार्थना करने लगा। उसका पसीना रक्त की बूँदों के समान धरती पर गिर रहा था।" **(Luke 22:44)**

"वह फिर चला गया और वैसे ही वचन बोलते हुए उसने प्रार्थना की।" **(Mark 14:39)**

6) हज़रत ईसा(अलै०) ने अपने शिष्यों को अल्लाह की उपासना करने का उपदेश दिया था।

"किन्तु जब तू प्रार्थना करे, अपनी कोठरी में चला जा और द्वार बन्द करके गुप्त रूप से अपने परम-पिता से प्रार्थना कर। फिर तेरा

परम-पिता जो तेरे छिपकर किए गए कर्मों को देखता है, तुझे उन का प्रतिफल देगा।" **(Mathew 6:6)**

"इस पर वह उनसे बोला, "तुम प्रार्थना करो, तो कहो: 'हे पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आवे।" **(Luke 11:2)**

"और प्रार्थना करते हुए तुम जो कुछ माँगो, यदि तुम्हें विश्वास है तो तुम पाओगे।" **(Mathew 21:22)**

7) हज़रत ईसा(अलै०) एक अल्लाह के प्रति ही कृतज्ञता और आभार व्यक्त करते थे।

"उसी क्षण वह पवित्र आत्मा में स्थित होकर आनन्दित हुआ और बोला, "हे परम पिता! हे स्वर्ग और धरती के प्रभु! मैं तेरी स्तुति करता हूँ कि तुमने इन बातों को चतुर और प्रतिभावान लोगों से छुपा कर रखते हुए भी बच्चों के लिये उन्हें प्रकट कर दिया। हे परम पिता! निश्चय ही तू ऐसा ही करना चाहता था।"

(Luke 10:21)

"तब उन्होंने उस चट्टान को हटा दिया। और यीशु ने अपनी आँखें ऊपर उठाते हुए कहा, "परम पिता मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ क्योंकि तूने मेरी सुन ली है।" **(John 11:41)**

"यीशु ने भीड़ से धरती पर बैठने को कहा और उन सात रोटियों और मछलियों को लेकर उसने परमेश्वर का धन्यवाद किया और रोटियाँ तोड़ीं और अपने शिष्यों को देने लगा। फिर उसके शिष्यों ने उन्हें आगे लोगों में बाँट दिया।" **(Mathew 15:35-36)**

8) हज़रत ईसा(अलै०) ऊँची आवाज़ में "अल्लाहु-अकबर" (अल्लाह सबसे महान है) की घोषणा किया करते थे।

"मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ एक दास स्वामी से बड़ा नहीं है और न ही एक संदेशवाहक उससे बड़ा है जो उसे भेजता है।"

(John 13:16)

"फिर ऐसा हुआ कि जैसे ही यीशु ने ये बातें कहीं, भीड़ में से एक स्त्री उठी और ऊँचे स्वर में बोली, "वह गर्भ धन्य है, जिसने तुझे धारण किया। वे स्तन धन्य है, जिनका तूने पान किया है।" इस पर उसने कहा, "धन्य तो बल्कि वे हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उस पर चलते हैं!" **(Luke 27-28)**

"यूहन्ना को बंदीगृह में डाले जाने के बाद यीशु गलील आया। और परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करने लगा।"

(Mark 1:14)

'परम पिता मुझसे महान है।" **(John 14:28)**

"मुझे उन्हें सौंपने वाला मेरा परम पिता सबसे महान है। मेरे पिता से उन्हें कोई नहीं छीन सकता।" **(John 10:29)**

9) हज़रत ईसा(अलै०) की शिक्षाओं को अस्वीकार करने के परिणाम।

"तुम मुझे 'प्रभु, प्रभु' क्यों कहते हो और जो मैं कहता हूँ, उस पर नहीं चलते?" **(Luke 6:46)**

"किन्तु वह जो मेरे शब्दों को सुनता है पर उन पर आचरण नहीं करता, उस मूर्ख मनुष्य के समान है जिसने अपना घर रेत पर बनाया।" **(Mathew 7:26)**

"तब मैं उनसे खुल कर कहूँगा कि मैं तुम्हें नहीं जानता, 'अरे कुकर्मियों, यहाँ से भाग जाओ।" **(Mathew 7:23)**

10) हज़रत ईसा(अलै०) की वह शिक्षाएं जिनको समझने में लोगों ने गलती की।

"मेरा पिता और मैं एक हैं।" **(John 10:30)**

"जब मैं कहता हूँ कि मैं परम पिता में हूँ और परम पिता मुझमें है तो मेरा विश्वास करो और यदि नहीं तो मेरे कामों के कारण ही विश्वास करो।" **(John 14:11)**

ईसा(अलै०) के कथन अनुसार, ईसा(अलै०) और अल्लाह भौतिक रूप से एक नहीं हैं।

उदहारण के लिए निम्निलखित सन्दर्भों को देखिये:

"उस दिन तुम जानोगे कि मैं परम पिता में हूँ, तुम मुझ में हो और मैं तुझमें।" **(John 14:20)**

"मैं अब और अधिक समय जगत में नहीं हूँ किन्तु वे जगत में है अब मैं तेरे पास आ रहा हूँ। हे पवित्र पिता अपने उस नाम की शक्ति से उनकी रक्षा कर जो तूने मुझे दिया है ताकि जैसे तू और मैं एक हैं, वे भी एक हो सकें।" **(John 17:11)**

"मैं उनमें होऊँगा और तू मुझमें होगा, जिससे वे पूर्ण एकता को प्राप्त हों और जगत जान जाये कि मुझे तूने भेजा है और तूने उन्हें भी वैसे ही प्रेम किया है जैसे तू मुझे प्रेम करता है।" **(John 17:23)**

उपयुक्त सन्दर्भों से यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि ईसा(अलै०) और उनके शिष्य भौतिक रूप से एक थे तो फ़िर इन शिष्यों भी ईसा(अलै०) के साथ ईश्वर का एक अंश होना चाहिए था। अर्थात वह भौतिक रूप से एक नहीं थे।

11) अल्लाह(यहोवा) के अतिरिक्त किसी अन्य की उपासना करना अभिशाप और वेश्यावृति जैसा है।

"क्योंकि तेरा पिता वही था जिसने तुझको रचा था। उसका नाम

सर्वशक्तिमान यहोवा है।" **(Isaiah 54:5)**

"हे इस्राएल, तू उस पुकार का आनन्द मत मना, जैसे देश-देश के लोग मनाते हैं! तू प्रसन्न मत हो! तने तो एक वेश्या के जैसा आचरण किया है और प्ररमेश्वर को बिसरा दिया है।"

(Hosea 9:1)

"हे स्वामी, तू दयालु और खरा है। तू सचमुच अपने उन भक्तों को प्रेम करता है, जो सहारा पाने को तुझको पुकारते हैं।"

(Psalm 86:5)

"यहूदा, तुमने वेश्या की तरह अनेक प्रेमियों (असत्य देवताओं) के साथ काम किये और अब तुम मेरे पास लौटना चाहते हो!"

(Jeremaiah 3:1)

प्रिय पाठक,

हज़रत ईसा(अलै०) की इन शिक्षाओं से स्पष्ट हो जाता है कि अल्लाह(प्रभु/यहोवा/पिता) एक ही है। तो फ़िर इतनी पथभ्रष्टता क्यों? क्या यह उचित नहीं होगा कि आज ही और इसी समय पश्चताप करते हुए अल्लाह की और पलट आया जाए और उसके आदेशों से मुंह मोड़ने पर उससे क्षमा याचना की जाए?

12) अंत में, हज़रत ईसा(अलै०) की दी हुई चेतावनी।

"प्रभु-प्रभु कहने वाला हर व्यक्ति स्वर्ग के राज्य में नहीं जा पायेगा बल्कि वह जो स्वर्ग में स्थित मेरे परम पिता की इच्छा पर चलता है, वही उसमें प्रवेश पायेगा।" **(Mathew 7:21)**

"जो कोई अल्लाह का साझी ठहराएगा, उसपर तो अल्लाह ने जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना आग है। अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं।" **(कुरआन 5:72)**

हज़रत ईसा(अलै०) की इन शिक्षाओं से यह निष्कर्ष निकलता है कि उन लोगों को स्वर्ग में प्रवेश नहीं मिल सकता, जो उनके आदेशों का पालन नहीं करते जिनमें स्पष्ट कहा गया है कि अल्लाह(यहोवा) ही अकेला उपासना के योग्य है।